



**संस्कृत सीखें**

**भाग - 1**

संग्रहकर्ता – रोबिन सिराना

# संस्कृत भाषा का संक्षिप्त परिचय

**संस्कृत**, विश्व की सम्मवतः प्राचीनतम भाषा है। इसे 'देवभाषा' और 'सुरभारती' भी कहते हैं। संस्कृत विश्व की अनेक भाषाओं की जननी है। संस्कृत में सनातन धर्म के अतिरिक्त बौद्ध एवं जैन धर्म का साहित्य भी विपुल मात्रा में उपलब्ध है। संस्कृत मात्र धर्म संबंधी साहित्य की ही भाषा नहीं है, अपितु संस्कृत में विज्ञान (भौतिक, रसायन, आयुर्वेद, गणित, ज्योतिषादि) विषयों के ग्रन्थों की सूची भी छोटी-मोटी नहीं है।

संस्कृत भाषा जितनी ही पुरातन है, उतनी ही वह अपने को चिर नवीन भी बनाती आई है। विशाल वैदिक वांगमय संस्कृत काव्य की अमूल्य निधि है। कालिदास, भवभूति, माघ, भास, बाणभट्ट, भर्तृहरि जैसे महान् रचनाकारों की कृतियाँ संस्कृत की उदात्तता का परिचय देती हैं। इनके अलावा बहुत ऐसे अज्ञात कवि हुए हैं जिन्होंने सामान्य जन की छोटी-छोटी इच्छाओं, सपनों एवं कठिनाइयों को भी स्वर दिया है। संस्कृत के आधुनिक लेखन में यह लोकधारा और मुखर हुई है। यही नहीं संस्कृत वर्तमान जीवन और हमारे संसार को समझने पहचानने के लिये भी एक अच्छा माध्यम बनने की क्षमता रखती है।

आधुनिक भाषा-विज्ञान की दृष्टि से संस्कृत **हिन्दू-यूरोपीय भाषा-परिवार** की हिन्दू-ईरानी शाखा की हिन्दू-आर्य उपशाखा में शामिल है। अनेक लिपियों में लिखी जाती है, जिनकी प्राचीन लिपियों में 'सरस्वती (सिन्धु)' और 'ब्राह्मी लिपि' एवं आधुनिक लिपियों में 'देवनागरी' प्रमुख है।

किसी भी भाषा के अंग प्रत्यंग का विश्लेषण तथा विवेचन **व्याकरण** (ग्रामर) कहलाता है। व्याकरण वह विद्या है जिसके द्वारा किसी भाषा का शुद्ध बोलना, शुद्ध पढ़ना और शुद्ध लिखना आता है। किसी भी भाषा के लिखने, पढ़ने और बोलने के निश्चित नियम होते हैं। भाषा की शुद्धता व सुंदरता को बनाए रखने के लिए इन नियमों का पालन करना आवश्यक होता है। ये नियम भी व्याकरण के अंतर्गत आते हैं। व्याकरण भाषा के अध्ययन का महत्वपूर्ण हिस्सा है। व्याकरण का दूसरा नाम "**शब्दानुशासन**" भी है। वह शब्दसंबंधी अनुशासन करता है - बतलाता है कि किसी शब्द का किस तरह प्रयोग करना चाहिए। भाषा में शब्दों की प्रवृत्ति अपनी ही रहती है; व्याकरण के कहने से भाषा में शब्द नहीं चलते। परंतु भाषा की प्रवृत्ति के अनुसार व्याकरण शब्दप्रयोग का निर्देश करता है। यह भाषा पर शासन नहीं करता, उसकी स्थितिप्रवृत्ति के अनुसार लोकशिक्षण करता है। व्याकरण का महत्व यह श्लोक भली-भाँति प्रतिपादित करता है :

**यद्यपि बहु नाधीषे तथापि पठ पुत्र व्याकरणम्।  
स्वजनो श्वजनो माऽभूत्सकलं शकलं सकृत्याकृत्॥**

**अर्थ :** " पुत्र! यदि तुम बहुत विद्वान नहीं बन पाते हो तो भी व्याकरण (अवश्य) पढ़ो ताकि 'स्वजन' 'श्वजन' (कुत्ता) न बने और 'सकल' (सम्पूर्ण) 'शकल' (टूटा हुआ) न बने तथा 'सकृत्' (किसी समय) 'शकृत्' (गोबर का घूरा) न बन जाय। "

## संस्कृत भाषा का जनक किसे कहा जाता है?

पाणिनि (५०० ई पू) संस्कृत भाषा के सबसे बड़े वैयाकरण हुए हैं। इनका जन्म तत्कालीन उत्तर पश्चिम भारत के गांधार में हुआ था। इनके व्याकरण का नाम अष्टाध्यायी है जिसमें आठ अध्याय और लगभग चार सहस्र सूत्र हैं। संस्कृत भाषा को व्याकरण सम्मत रूप देने में पाणिनि का योगदान अतुलनीय माना जाता है। अष्टाध्यायी मात्र व्याकरण ग्रंथ नहीं है। इसमें प्रकारांतर से तत्कालीन भारतीय समाज का पूरा चित्र मिलता है। इनका जीवनकाल ५२० – ४६० ईसा पूर्व माना जाता है।

एक शताब्दी से भी पहले प्रिसद्ध जर्मन भारतिवद मैक्स मूलर (१८२३-१९००) ने अपने साइंस आफ थाट में कहा -

"मैं निर्भीकतापूर्वक कह सकता हूँ कि अंग्रेजी या लैटिन या ग्रीक में ऐसी संकल्पनाएँ नगण्य हैं जिन्हें संस्कृत धातुओं से व्युत्पन्न शब्दों से अभिव्यक्त न किया जा सके। इसके विपरीत मेरा विश्वास है कि 2,50,000 शब्द सम्मिलित माने जाने वाले अंग्रेजी शब्दकोश की सम्पूर्ण सम्पदा के स्पष्टीकरण हेतु वांछित धातुओं की संख्या, उचित सीमाओं में न्यूनीकृत पाणिनीय धातुओं से भी कम है। .... अंग्रेजी में ऐसा कोई वाक्य नहीं जिसके प्रत्येक शब्द का 800 धातुओं से एवं प्रत्येक विचार का पाणिनि द्वारा प्रदत्त सामग्री के सावधानीपूर्वक वेश्लेषण के बाद अविश्वस्त 121 मौलिक संकल्पनाओं से सम्बन्ध निकाला न जा सके।"

*The M L B D News letter (A monthly of indological bibliography) in April 1993, में महर्षि पाणिनि को first softwear man without hardware घोषित किया है। जिसका मुख्य शीर्षक था " Sanskrit software for future hardware "*

जिसमें बताया गया " प्राकृतिक भाषाओं को कंप्यूटर प्रोग्रामिंग के लिए अनुकूल बनाने के तीन दशक की कोशिश करने के बाद, वैज्ञानिकों को एहसास हुआ कि कंप्यूटर प्रोग्रामिंग में भी हम 2600 साल पहले ही पराजित हो चुके हैं। हालाँकि उस समय इस तथ्य किस प्रकार और कहाँ उपयोग करते थे यह तो नहीं कह सकते, परआज भी दुनिया भर में कंप्यूटर वैज्ञानिक मानते हैं कि आधुनिक समय में संस्कृत व्याकरण सभी कंप्यूटर की समस्याओं को हल करने में सक्षम है।

व्याकरण के इस महनीय ग्रन्थ में पाणिनि ने विभक्ति-प्रधान संस्कृत भाषा के 4000 सूत्र बहुत ही वैज्ञानिक और तर्कसिद्ध ढंग से संगृहीत हैं।

**NASA के वैज्ञानिक Mr.Rick Briggs** ने अमेरिका में कृत्रिम बुद्धिमत्ता और पाणिनी व्याकरण के बीच की शृंखला खोज की। प्राकृतिक भाषाओं को कंप्यूटर प्रोग्रामिंग के लिए अनुकूल बनाना बहुत मुस्किल कार्य था जब तक कि Mr.Rick Briggs. द्वारा संस्कृत के उपयोग की खोज न गयी। उसके बाद एक प्रोजेक्ट पर कई देशों के साथ करोड़ों डॉलर खर्च किये गये।

महर्षि पाणिनि शिव जी बड़े भक्त थे और उनकी कृपा से उन्हें महेश्वर सूत्र से ज्ञात हुआ जब शिव जी संध्या तांडव के समय उनके डमरू से निकली हुई ध्वनि से उन्होंने संस्कृत में वर्तिका नियम की रचना की थी। पाणिनीय व्याकरण की महत्ता पर विद्वानों के विचार

- "पाणिनीय व्याकरण मानवीय मष्टिष्ठ की सबसे बड़ी रचनाओं में से एक है" (लेनिन ग्राड के प्रोफेसर टी. शेरवात्सकी)
- "पाणिनीय व्याकरण की शैली अतिशय-प्रतिभापूर्ण है और इसके नियम अत्यन्त सतर्कता से बनाये गये हैं" (कोल ब्रुक)
- "संसार के व्याकरणों में पाणिनीय व्याकरण सर्वशिरोमणि है... यह मानवीय मष्टिष्ठ का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अविष्कार है" (सर डब्ल्यू. डब्ल्यू. हण्डर)
- "पाणिनीय व्याकरण उस मानव-मष्टिष्ठ की प्रतिभा का आश्वर्यतम नमूना है जिसे किसी दूसरे देश ने आज तक सामने नहीं रखा"। (प्रो. मोनियर विलियम्स)  
॥ जयतु संस्कृतम् । जयतु भारतम्

## इस समय संस्कृत भाषा का क्या फायदा है?

संस्कृत भाषा में दो मुख्य बिन्दु होते हैं - विसर्ग (:) और अनुस्वार (म)! संस्कृत के अधिकांश पूलिंग शब्द विसरंगात होते हैं जैसे कि छात्रः, खगः इत्यादि। आप इन शब्दों को मुख से एक बार उच्चारण कर के देखिए आप जान जाएंगे इन शब्दों की खासियत यह है कि इनके पीछे विसर्ग लगने से इनके उच्चारण के दौरान श्वास बाहर निकलता है, ठीक वैसे जैसे कि कपालभाति प्राणायाम में श्वास बाहर आता है तो जितनी बार विसर्ग वाले शब्दों का उच्चारण होता है, अपने आप सहज रूप से कपालभाति प्राणायाम होता जाता है अनायास ही उससे मिलने वाले लाभ भी प्राप्त हो जाते हैं।

वही संस्कृत के अधिकतर नपुंसक लिंग के शब्द अनुस्वार की श्रेणी में आते हैं अगजम्पल के तौर पर वनम, पुस्तकं, मन्दिरम, भवंम, आदि अब जरा इन शब्दों को उच्चारण पर गौर करे, उच्चारण के अंत में आपके मुख से सहज ही भवरे के गुंजन की आवाज निकलेगी जो भ्रामरी प्राणायाम की प्रक्रिया है तो अब जितनी बार संस्कृत के नपुंसक लिंग के अनुस्वारांत शब्द बोले जाते हैं उतनी ही बार स्वतः ही भ्रामरी प्राणायाम के लाभ प्राप्त हो जाते हैं।

संस्कृत के अधिकांश वाक्यों में अनुस्वार और विसर्ग दोनों ही प्रयोग होते हैं। अब यदि आम बोल चाल की भाषा बन जाये तो बातचीत करते हुए प्राणायाम स्वतः ही करते रहेंगे

और स्वास्थ्य लाभ भी मिलते रहेंगे । इशलिये जहाँ तक मेरा अपना तर्क है हमारे ऋषि मुनियों ने एक पंथ दो काज के पथ पर चलते हुए देव वाणी संस्कृत अपनायी ।

## संस्कृत सभी भाषाओं की उदगम है, इसके क्या साक्ष्य हैं ?

भारत की अकेली विशिष्ट भाषा संस्कृत है। जिसके पास शब्दों का सबसे बड़ा भण्डार है। दुनिया में बोली जाने वाली भाषा जिसको हम अंग्रेजी कहते हैं, रसियन, जर्मन, फ्रेंच, डच, स्पेनिश, डेनिस या चाइनीज। इन सब भाषाओं से हजारों गुण ज्यादा शब्द संस्कृत भाषा में हैं। महर्षि पाणिनी से लेकर आज तक यदि संस्कृत के उपयोग किये गये शब्दों की गणना की जाए, कि कितने शब्द भाषा के स्तर पर उपयोग किये हैं। 102 अरब 78 करोड़ 50 लाख शब्दों का उपयोग अब तक हो चुका है। संस्कृत भाषा बहुता समृद्धशाली हैं। जब भाषा समृद्ध होती है तो साहित्य भी समृद्ध होता है। संस्कृत भाषा में जितना साहित्य लिखा गया है पूरी दुनिया में शायद ही किसी भाषा में लिखा गया है।

## संस्कृत भाषा के पतन का क्या कारण है? क्या पुनः उदय संभव है?

संस्कृत भाषा के पतन के कई कारण हैं जिनमें से प्रमुख ये हैं।

१- मुस्लिम शासन के बाद संस्कृत राजकाज की भाषा नहीं रह गयी और शासकों द्वारा संस्कृत भाषा को प्रोत्साहन नहीं दिया गया जिससे इसकी उपयोगिता बहुत सीमित रह गयी।

२- मुस्लिम आक्रमणों के दौरान पुस्तकालयों और विश्वविद्यालयों के विनाश के कारण अधिकांश संस्कृत ग्रन्थ नष्ट हो गये। केवल वे ग्रन्थ ही बचे जो पुरोहितों, वैद्यों व ज्योतिषियों जैसे पेशेवर लोगों की जीविका से सम्बन्धित होने के कारण इन लोगों के घर में सुरक्षित रहे। अतः मध्यकाल में संस्कृत की छवि हिन्दुओं की धार्मिक भाषा की बन गयी। यह भुला दिया गया कि संस्कृत में प्रचूर धर्मनिरपेक्ष साहित्य भी उपलब्ध है।

३- लॉर्ड मैकाले द्वारा प्रवर्तित शिक्षापद्धति में सभी भारतीय भाषाओं तथा भारत में प्रचलित शास्त्रीय भाषाओं की इस तरह उपेक्षा की गयी कि उन्हें सीखने की उपयोगिता नहीं रह गयी। प्रचलित भाषाओं का समाज में व्यवहार होता था इस नाते उनका प्रचलन बना रहा पर संस्कृत सीखने की अब कोई आवश्यकता नहीं थी अतः उसका प्रचलन कम होता गया।

४- उत्तर भारत में उर्दू के मुकाबले में हिन्दी को यह कहकर खड़ा किया गया कि यह हिन्दुओं की भाषा उसी प्रकार है जिस प्रकार मुसलमानों की भाषा उर्दू है। इसका परिणाम यह हुआ कि अपनी धार्मिक भाषा के रूप में भी संस्कृत सीखने का उत्साह हिन्दुओं में कम हो गया। अन्य क्षेत्रों में भी वहाँ की क्षेत्रीय पहचान पर जोर देने से लोग संस्कृत की अपेक्षा स्थानीय भाषा को महत्व देने लगे और यही सुविधाजनक भी था।

५- स्वतन्त्रता के समय तक देश में ऐसे नेता हावी हो चुके थे जो संस्कृत की प्राचीन परम्परा से कटे हुए थे और इस नाते उन्हें यह विश्वास नहीं था कि संस्कृत को पुनः जीवित किया जा सकता है। इन नेताओं के दृष्टिकोण ने भी संस्कृत के पतन में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

## संस्कृत को देवभाषा क्यों कहा गया है? यह भाषा अन्य भाषाओं से किन मानकों पर बेहतर है?

रूसी, जर्मन, जापानी, अमेरिकी सक्रिय रूप से हमारी पवित्र पुस्तकों से नई चीजों पर शोध कर रहे हैं और उन्हें वापस दुनिया के सामने अपने नाम से रख रहे हैं। दुनिया के कई देशों में एक या अधिक संस्कृत विश्वविद्यालय संस्कृत और वेद के बारे में अध्ययन और नई प्रौद्योगिकी प्राप्त करने के लिए जुटे हैं। हमारे देश में तो इंग्लिश बोलना शान की बात मानी जाती है। इंग्लिश नहीं आने पर लोग आत्मगलानि अनुभव करते हैं जिस कारण जगह-जगह इंग्लिश स्पीकिंग कोर्स चल रहे हैं।

संस्कृत विश्व की सबसे प्राचीन भाषा है तथा समस्त भारतीय भाषाओं की जननी है। 'संस्कृत' का शाब्दिक अर्थ है परिपूर्ण भाषा। संस्कृत पूर्णतया वैज्ञानिक तथा सक्षम भाषा है। संस्कृत भाषा के व्याकरण में विश्वभर के भाषा विशेषज्ञों का ध्यानाकर्षण किया है। उसके व्याकरण को देखकर ही अन्य भाषाओं के व्याकरण विकसित हुए हैं। आधुनिक वैज्ञानिकों के अनुसार यह भाषा कम्प्यूटर के उपयोग के लिए सर्वोत्तम भाषा है, लेकिन इस भाषा को वे कभी भी कम्प्यूटर की भाषा नहीं बनने देंगे।

कहते हैं कि किसी देश की जाति, संस्कृति, धर्म और इतिहास को नष्ट करना है तो उसकी भाषा को सबसे पहले नष्ट किया जाए। मात्र 3,000 वर्ष पूर्व तक भारत में संस्कृत बोली जाती थी तभी तो ईसा से 500 वर्ष पूर्व पाणिणी ने दुनिया का पहला व्याकरण ग्रंथ लिखा था, जो संस्कृत का था। इसका नाम 'अष्टाध्यायी' है।

1100 ईसवीं तक संस्कृत समस्त भारत की राजभाषा के रूप से जोड़ने की प्रमुख कड़ी थी। अरबों और अंग्रेजों ने सबसे पहले ही इसी भाषा को खत्म किया और भारत पर अरबी और रोमन लिपि और भाषा को लादा गया। भारत की कई भाषाओं की लिपि देवनागरी थी लेकिन उसे बदलकर अरबी कर दिया गया, तो कुछ को नष्ट ही कर दिया गया। वर्तमान में हिन्दी की लिपि को रोमन में बदलने का छद्म कार्य शुरू हो चला है।

यदि संस्कृत व्यापक पैमाने पर नहीं बोली जाती तो व्याकरण लिखने की आवश्यकता ही नहीं होती। भारत में आज जितनी भी भाषाएं बोली जाती हैं वे सभी संस्कृत से जन्मी हैं जिनका इतिहास मात्र 1500 से 2000 वर्ष पुराना है। उन सभी से पहले संस्कृत, प्राकृत, पाली, अर्धमागधि आदि भाषाओं का प्रचलन था।

आदिकाल में भाषा नहीं थी, ध्वनि संकेत थे। ध्वनि संकेतों से मानव समझता था कि कोई व्यक्ति क्या कहना चाहता है। फिर चित्रलिपियों का प्रयोग किया जाने लगा। प्रारंभिक मनुष्यों ने भाषा की रचना अपनी विशेष बौद्धिक प्रतिभा के बल पर नहीं की। उन्होंने अपने-अपने ध्वनि संकेतों को चित्र रूप और फिर विशेष आकृति के रूप देना शुरू किया। इस तरह भाषा का क्रमशः विकास हुआ। इसमें किसी भी प्रकार की बौद्धिक और वैज्ञानिक क्षमता का उपयोग नहीं किया गया।

संस्कृत ऐसी भाषा नहीं है जिसकी रचना की गई हो। इस भाषा की खोज की गई है। भारत में पहली बार उन लोगों ने सोचा-समझा और जाना कि मानव के पास अपनी कोई एक लिपियुक्त और मुकम्मल भाषा होना चाहिए जिसके माध्यम से वह संप्रेषण और विचार-विमर्श ही नहीं कर सके बल्कि जिसका कोई वैज्ञानिक और मनोवैज्ञानिक आधार भी हो। ये वे लोग थे, जो हिमालय के आसपास रहते थे।

उन्होंने ऐसी भाषा को बोलना शुरू किया, जो प्रकृतिसम्मत थी। पहली दफे सोच-समझकर किसी भाषा का आविष्कार हुआ था तो वो संस्कृत थी। चूंकि इसका आविष्कार करने वाले देवलोक के देवता थे तो इसे देववाणी कहा जाने लगा। संस्कृत को देवनागरी में लिखा जाता है। देवता लोग हिमालय के उत्तर में रहते थे।

दुनिया की सभी भाषाओं का विकास मानव, पशु-पक्षियों द्वारा शुरुआत में बोले गए ध्वनि संकेतों के आधार पर हुआ अर्थात् लोगों ने भाषाओं का विकास किया और उसे अपने देश और धर्म की भाषा बनाया। लेकिन संस्कृत किसी देश या धर्म की भाषा नहीं यह अपौरुष भाषा है, क्योंकि इसकी उत्पत्ति और विकास ब्रह्मांड की ध्वनियों को सुन-जानकर हुआ। यह आम लोगों द्वारा बोली गई ध्वनियां नहीं हैं।

धरती और ब्रह्मांड में गति सर्वत्र है। चाहे वस्तु स्थिर हो या गतिमान। गति होगी तो ध्वनि निकलेगी। ध्वनि होगी तो शब्द निकलेगा। देवों और ऋषियों ने उक्त ध्वनियों और शब्दों को पकड़कर उसे लिपि में बांधा और उसके महत्व और प्रभाव को समझा।

संस्कृत विद्वानों के अनुसार सौर परिवार के प्रमुख सूर्य के एक ओर से 9 रश्मियां निकलती हैं और ये चारों ओर से अलग-अलग निकलती हैं। इस तरह कुल 36 रश्मियां हो गईं। इन 36 रश्मियों के ध्वनियों पर संस्कृत के 36 स्वर बने। इस तरह सूर्य की जब 9 रश्मियां पृथ्वी पर आती हैं तो उनकी पृथ्वी के 8 वसुओं से टक्कर होती है। सूर्य की 9 रश्मियां और पृथ्वी के 8 वसुओं के आपस में टकराने से जो 72 प्रकार की ध्वनियां उत्पन्न हुईं, वे संस्कृत के 72 व्यंजन बन गईं। इस प्रकार ब्रह्मांड में निकलने वाली कुल 108 ध्वनियां पर संस्कृत की वर्ण माला आधारित हैं।

ब्रह्मांड की ध्वनियों के रहस्य के बारे में वेदों से ही जानकारी मिलती है। इन ध्वनियों को अंतरिक्ष वैज्ञानिकों के संगठन नासा और इसरो ने भी माना है।

कहा जाता है कि अरबी भाषा को कंठ से और अंग्रेजी को केवल होंठों से ही बोला जाता है किंतु संस्कृत में वर्णमाला को स्वरों की आवाज के आधार पर कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, पर्वर्ग, अंतःस्थ और ऊष्म वर्गों में बांटा गया है।

## संस्कृत सीखने के लिए क्या आना चाहिए?

संस्कृत सीखने के लिए मेरे विचार में आपको दो चीजें प्रमुखता से आनी चाहिए प्रथम-धातु रूप या क्रिया।

जैसे-गम्(जाना),लिख्(लिखना),खाद्(खाना),अस्(होना)....।

**द्वितीय-शब्द रूप।**

जैसे-अहम्(मैं),त्वम्(तुम),अयम्(यह),राम,पिता...।

## लट् लकार

लट् लकार वर्तमान को कहते हैं । ये सब लकार verbs को बदलने के लिये प्रयोग किये जाते हैं ।

जैसे भू धातु है । जिसका मतलब है 'होना' तो अगर हमें वर्तमान में इसका प्रयोग करना है, तो हम लट् लकार का प्रयोग करते हैं । लकार है कि धातु में क्या बदलाव आयेगा । उसका क्या भाव होगा ।

**भू**(लट्लकार मतलब वर्तमान काल)

- प्रथम (अन्य) पुरुष : भवति - भवतः - भवन्ति
- मध्यम पुरुष : भवसि - भवथः - भवथ
- उत्तम पुरुष : भवामि - भवावः - भवामः

- प्रथम पुरुष होता है कोई तीसरा (अन्य) आदमी ।
- मध्यम पुरुष है 'तुम, आप, तुम लोग आदि' ।
- उत्तम पुरुष मतलब 'मैं, हम सब' ।

तो एक संख्या के लिये भवति (प्रथम पुरुष), भवसि (मध्यम पुरुष) और भवामि (उत्तम पुरुष) प्रयोग होगा । उसी तरह दो संख्याओं के लिये भवतः भवथः भवावः, और दो से अधिक संख्याओं के लिये भवन्ति, भवथ, भवामः का प्रयोग होगा ।

जैसे -

- अहम् पठामि (मैं पढ़ रहा हूँ । )
- अहम् खादामि (मैं खा रहा हूँ )

- अहम् वदामि । (मैं बोल रहा हूँ)
- त्वम् गच्छसि । (तुम जा रहे हो)
- सः पठति (वह पढ़ता है)
- तौ पठतः (वे दोनों पढ़ते हैं)
- ते पठन्ति (वे सब पढ़ते हैं)
- युवाम् वदथः (तुम दोनों बताते हो )
- युयम् वदथ (तुम सब बताते हो, बता रहे हो)
- आवाम् क्षिपावः (हम दोनों फेंकते हैं)
- वयं सत्यम् कथामः (हम-सब सत्य कहते हैं)

तो अगर अभी कुछ हो रहा है, उसे बताना है तो धातुयों को लकार का रूप देते हैं ।  
उसी प्रकार और भी कई लकार हैं ।

## लोट् लकार

जैसे लट् वर्तमान काल या वर्तमान भाव बताने के लिये होता है, उसी प्रकार लोट् लकार होता है आज्ञार्थक भाव बताने या आज्ञा देने के लिये अथवा आदेश देने के लिए ।  
आज्ञा देना, या याचना करने के लिये या आज्ञा लेने के लिये भी ।

जैसे -

- भवतु भवताम् भवन्तु
- भव भवतम् भवत
- भवानि भवाव भवाम

(आप को याद होगा श्रीमद् भगवद् गीता में भगवान् अर्जुन को कहते हैं 'योगी भव अर्जुन')  
ॐ नमः भगवते वासुदेवाय - भगवान् वासुदेव को मैं नमस्कार करता हूँ ।

इस पाठ में हम  
संस्कृत भाषा के व्याकरण का आरम्भ  
करने जा रहे हैं। **लिंग** क्या है?  
ये भी हम जानेंगे।

एषः कः? यह कौन है? पुलिंग  
एषा का? यह कौन है? ? स्त्रीलिंग



एषः बालकः। एषा बालिका।

एषः कः?



एषः गजः।



एषा गजा।

सः कः?



सः सिंहः।

सा का?  
सा सिंही।



सः कः?  
सः देवः।



सा का?  
सा देवी।



क्या आपने ध्यान दिया?

1. पुल्लिंग शब्द के अंत में **अ** आता है।

एषः सः कः हस्तः चरणः गजः अश्वः मयूरः सिंहः  
बालकः मूषकः पुरुषः देवः

2. स्त्रीलिंग शब्द के अंत में **आ, ई** आता है।

एषा सा का बालिका नासिका जिह्वा मूषिका  
सिंही स्त्री देवी

हिन्दी में भी तो ऐसा ही होता है।

1. पुरुष नाम के अंत में **अ** आता है।  
रमेश रवीन्द्र नवीन अजय निखिल
2. स्त्री नाम के अंत में **आ, ई** आता है।  
सीमा मीरा गीता साक्षी लक्ष्मी

इस पाठ में हम  
संस्कृत भाषा में वचन  
को समझेंगे।

सः किम् करोति? वह क्या करता है?	पुं०, एक०
ते किम् कुर्वन्ति? वे क्या करते हैं?	पुं०, बहु०
सा किम् करोति? वह क्या करती है?	स्त्री०, एक०
ताः किम् कुर्वन्ति? वे क्या करती हैं?	स्त्री०, बहु०

सः कः?  
सः लेखकः।  
लेखकः किम् करोति?  
लेखकः लिखति।



सः कः?  
सः सिंहः।  
सिंहः किम् करोति?  
सिंहः गर्जति।

एषः कः?  
एषः गजः।  
गजः किम् करोति?  
गजः चलति।



गजाः किम् कुर्वन्ति?  
गजाः चलन्ति।



एषा का?  
एषा नदी।  
नदी किम् करोति?  
नदी वहति।



सः	वह	पुं°, एक°	एषः	यह	पुं°, एक°
सा	वह	स्त्री°, एक°	एषा	यह	स्त्री°, एक°
ते	वे	पुं°, बहु°	एते	ये	पुं°, बहु°
ताः	वे	स्त्री°, बहु°	एताः	ये	स्त्री°, बहु°
किम्	क्या ?		कः	कौन	पुं°, एक°
करोति	करता है		का	कौन	स्त्री°, एक°
कुर्वन्ति	करते हैं		के	कौन	पुं°, बहु°
			काः	कौन	स्त्री°, बहु°

इस पाठ में हम  
कर्ता, कर्म और क्रिया  
को जानेंगे।

**घोड़ा घास खाता है।**

कौन खाता है? घोड़ा  
क्या खाता है? घास

जो खाता है, वह कर्ता (Subject) है।

जो खाया जाता है, वह कर्म (Object) है।

जो काम हो रहा है, वह क्रिया (Verb) है।

**घोड़ा - कर्ता**  
**घास - कर्म**  
**खाना - क्रिया**

**बालक पुस्तक पढ़ता है।**

कौन पढ़ता है? बालक  
क्या पढ़ता है? पुस्तक

जो पढ़ता है, वह कर्ता है।

जो पढ़ा जाता है, वह कर्म है।

जो काम हो रहा है, वह क्रिया है।

**बालक - कर्ता**  
**पुस्तक - कर्म**  
**पढ़ना - क्रिया**

लेखिका कहानी लिखती है।

कौन लिखती है? लेखिका

क्या लिखती है? कहानी

जो लिखती है, वह कर्ता है।

जो लिखी जाती है, वह कर्म है।

जो काम हो रहा है, वह क्रिया है।

लेखिका - कर्ता

कहानी - कर्म

लिखना - क्रिया

सः पुस्तकं पठति। वह पुस्तक पढ़ता है।  
वह पुस्तक को पढ़ता है।

रामः मेघं पश्यति। राम बादल को देखता है।

अश्वः जलं पिबति। घोड़ा पानी पीता है।

सः रामः अश्वः : कर्ता  
पुस्तकं मेघं जलं : कर्म  
पठति पश्यति पिबति : क्रिया

संस्कृत भाषा में कर्म के साथ **बिंदी** लगाते हैं।

मृग बालक को देखता है। बालक मृग को देखता है।

मृगः बालकं पश्यति। बालकः मृगं पश्यति।

बालकं मृगः पश्यति। मृगं बालकः पश्यति।

पश्यति मृगः बालकम्। पश्यति मृगं बालकः।

पश्यति बालकं मृगः। पश्यति बालकः मृगम्।

बालकं पश्यति मृगः। बालकः पश्यति मृगम्।

मृगः पश्यति बालकम्। मृगं पश्यति बालकः।

सा का?  
सा गायिका।  
गायिका किम् करोति?  
गायिका गायति।  
गायिका किम् गायति?  
सा गीतं गायति।  
एषा गायिका मधुरं गीतं गायति।



एषः कः?  
एषः बालकः।  
बालकः किम् करोति?  
बालकः पठति।  
बालकः किम् पठति?  
बालकः पुस्तकं पठति।



सः वीरः कः?  
सः अर्जुनः।  
अर्जुनः किम् करोति?  
सः क्षिपति।  
सः किम् क्षिपति।  
सः बाणं क्षिपति।



सिंहः किम् करोति? | सिंहः खादति।

सिंहः किम् खादति?



सिंहः मांसं खादति।

पितामहः गीतां पठति।

दादाजी गीता पढ़ते हैं।

छात्रः पाठम् पठति।

छात्र पाठ पढ़ता है।

सः मेघं पश्यति।

वह बादल को देखता है।

सा विद्यालयं गच्छति।

वह स्कूल जाती है।

रामः पाठम् न पठति?

राम पाठ नहीं पढ़ता है?

सः बालकः प्रश्नं पृच्छति।

वह बालक सवाल पूछता है।

इस पाठ में हम  
**वचन** को विस्तार से जानेंगे  
तथा **प्रथम पुरुष** और  
**लट् लकार** को समझेंगे।

## वचन

वचन, यानि संख्या या Number

संस्कृत में 3 वचन होते हैं:

**एकवचन** एक को दिखाता है।

**द्विवचन** दो को दिखाता है।

**बहुवचन** दो से अधिक को दिखाता है।

### वचन

अश्वः



अश्वाः



अश्वौ

वचन



विडालौ



विडालः

विडाला:

वचन



खगः



खगा:



खगौ

## वर्तमान काल (Present Tense)

हम इसे संस्कृत में **लट्** लकार कहते हैं।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
<b>लट्</b>	लिखति	लिखतः	लिखन्ति
	लिखता है	दो लिखते हैं	लिखते हैं

### चल् - चलना

**एकवचन** चलति चलता है।

**द्विवचन** चलतः दो चलते हैं।

**बहुवचन** चलन्ति चलते हैं।

## पढ़ - पढ़ना

**एकवचन** पठति पढ़ता है।  
**द्विवचन** पठतः दो पढ़ते हैं।  
**बहुवचन** पठन्ति पढ़ते हैं।

## खाद - खाना

**एकवचन** खादति खाता है।  
**द्विवचन** खादतः दो खाते हैं।  
**बहुवचन** खादन्ति खाते हैं।

## पिब - पीना

**एकवचन** पिबति पीता है।  
**द्विवचन** पिबतः दो पीते हैं।  
**बहुवचन** पिबन्ति पीते हैं।

## धाव् - दौड़ना

**एकवचन** धावति दौड़ता है।  
**द्विवचन** धावतः दो दौड़ते हैं।  
**बहुवचन** धावन्ति दौड़ते हैं।

## गर्ज् - गरजना

**एकवचन** गर्जति गरजता है।  
**द्विवचन** गर्जतः दो गरजते हैं।  
**बहुवचन** गर्जन्ति गरजते हैं।

## चुर् - चुराना

**एकवचन** चोरयति चुराता है।  
**द्विवचन** चोरयतः दो चुराते हैं।  
**बहुवचन** चोरयन्ति चुराते हैं।

## क्रीड़ - खेलना

- एकवचन** क्रीडति खेलता है।  
**द्विवचन** क्रीडतः दो खेलते हैं।  
**बहुवचन** क्रीडन्ति खेलते हैं।

## गम् - जाना

- एकवचन** गच्छति जाता है।  
**द्विवचन** गच्छतः दो जाते हैं।  
**बहुवचन** गच्छन्ति जाते हैं।

## रक्ष् - रक्षा करना

- एकवचन** रक्षति रक्षा करता है।  
**द्विवचन** रक्षतः दो रक्षा करते हैं।  
**बहुवचन** रक्षन्ति रक्षा करते हैं।

## भू - होना

**एकवचन** भवति होता है।  
**द्विवचन** भवतः दो होते हैं।  
**बहुवचन** भवन्ति होते हैं।

## भू - होना

**एकवचन** भवति होता है।  
**द्विवचन** भवतः दो होते हैं।  
**बहुवचन** भवन्ति होते हैं।

## अर्च - पूजा करना

**एकवचन** अर्चति पूजा करता है।  
**द्विवचन** अर्चतः दो पूजा करते हैं।  
**बहुवचन** अर्चन्ति पूजा करते हैं।

## वस् - बसना, रहना

**एकवचन** वसति रहता है।  
**द्विवचन** वसतः दो रहते हैं।  
**बहुवचन** वसन्ति रहते हैं।

## अर्च् - पूजा करना

**एकवचन** अर्चति पूजा करता है।  
**द्विवचन** अर्चतः दो पूजा करते हैं।  
**बहुवचन** अर्चन्ति पूजा करते हैं।

## क्षिप् – फैंकना

**एकवचन** क्षिपति फैंकता है।  
**द्विवचन** क्षिपतः दो फैंकते हैं।  
**बहुवचन** क्षिपन्ति फैंकते हैं।

## नृत् - नाचना

**एकवचन** नृत्यति नाचता है।  
**द्विवचन** नृत्यतः दो नाचते हैं।  
**बहुवचन** नृत्यन्ति नाचते हैं।

## प्रच्छ - पूछना

**एकवचन** पृच्छति पूछता है।  
**द्विवचन** पृच्छतः दो पूछते हैं।  
**बहुवचन** पृच्छन्ति पूछते हैं।

## अस् होना

**एकवचन** अस्ति है।  
**द्विवचन** स्तः दो हैं।  
**बहुवचन** सन्ति हैं।

इस पाठ में हम  
मध्यम पुरुष को विस्तार  
से समझेंगे।

### पुरुष

संस्कृत में 3 पुरुष होते हैं:

प्रथम पुरुष वह, वे, यह, ये को दिखाता है।

मध्यम पुरुष तुम, तुम सब को दिखाता है।

उत्तम पुरुष मैं, हम को दिखाता है।

तुम

एकवचन त्वम् तुम

द्विवचन युवाम् तुम दो

बहुवचन यूयम् तुम सब

## चल - चलना

एकवचन	त्वम् चलसि	तुम चलते हो
द्विवचन	युवाम् चलथः	तुम दो चलते हो
बहुवचन	यूयम् चलथ	तुम सब चलते हो

## पठ - पढ़ना

एकवचन	पठसि	तुम पढ़ते हो
द्विवचन	पठथः	तुम दो पढ़ते हो
बहुवचन	पठथ	तुम सब पढ़ते हो

## खाद - खाना

एकवचन	खादसि	तुम खाते हो
द्विवचन	खादथः	तुम दो खाते हो
बहुवचन	खादथ	तुम सब खाते हो

## पिब् - पीना

एकवचन	पिबसि	तुम पीते हो
द्विवचन	पिबथः	तुम दो पीते हो
बहुवचन	पिबथ	तुम सब पीते हो

## धाव् - दौड़ना

एकवचन	धावसि	तुम दौड़ते हो
द्विवचन	धावथः	तुम दो दौड़ते हो
बहुवचन	धावथ	तुम सब दौड़ते हो

## गर्ज् - गरजना

एकवचन	गर्जसि	तुम गरजते हो
द्विवचन	गर्जथः	तुम दो गरजते हो
बहुवचन	गर्जथ	तुम सब गरजते हो

## चुरः - चुराना

एकवचन	चोरयसि	तुम चुराते हो
द्विवचन	चोरयथः	तुम दो चुराते हो
बहुवचन	चोरयथ	तुम सब चुराते हो

## क्रीडः - खेलना

एकवचन	क्रीडसि	तुम खेलते हो
द्विवचन	क्रीडथः	तुम दो खेलते हो
बहुवचन	क्रीडथ	तुम सब खेलते हो

## गच्छ - जाना

एकवचन	गच्छसि	तुम जाते हो
द्विवचन	गच्छथः	तुम दो जाते हो
बहुवचन	गच्छथ	तुम सब जाते हो

## रक्षा - रक्षा करना

एकवचन	रक्षसि	तुम रक्षा करते हो
द्विवचन	रक्षथः	तुम दो रक्षा करते हो
बहुवचन	रक्षथ	तुम सब रक्षा करते हो

## भू - होना

एकवचन	भवसि	तुम होते हो
द्विवचन	भवथः	तुम दो होते हो
बहुवचन	भवथ	तुम सब होते हो

## अर्च - पूजा करना

एकवचन	अर्चसि	तुम पूजा करते हो
द्विवचन	अर्चथः	तुम दो पूजा करते हो
बहुवचन	अर्चथ	तुम सब पूजा करते हो

## अस् होना

एकवचन	असि	तुम हो
द्विवचन	स्थः	तुम दो हो
बहुवचन	स्थ	तुम सब हो

## वद् - बोलना

एकवचन	वदसि	तुम बोलते हो
द्विवचन	वदथः	तुम दो बोलते हो
बहुवचन	वदथ	तुम सब बोलते हो

## वस् - बसना, रहना

एकवचन	वससि	तुम रहते हो
द्विवचन	वसथः	तुम दो रहते हो
बहुवचन	वसथ	तुम सब रहते हो

## स्था - बैठना

एकवचन	तिष्ठसि तुम बैठते हो
द्विवचन	तिष्ठथः तुम दो बैठते हो
बहुवचन	तिष्ठथ तुम सब बैठते हो

## क्षिप् - फैंकना

एकवचन	क्षिपसि तुम फैंकते हो
द्विवचन	क्षिपथः तुम दो फैंकते हो
बहुवचन	क्षिपथ तुम सब फैंकते हो

## नृत् - नाचना

एकवचन	नृत्यसि तुम नाचते हो
द्विवचन	नृत्यथः तुम दो नाचते हो
बहुवचन	नृत्यथ तुम सब नाचते हो

## प्रच्छ - पूछना

एकवचन

पृच्छसि तुम पूछते हो

द्विवचन

पृच्छथः तुम दो पूछते हो

बहुवचन

पृच्छथ तुम सब पूछते हो

त्वम् बालकः असि।

युवाम् बालकौ स्थः।

यूयम् बालकाः स्थ।

किम् पठसि?

किम् लिखसि?

किम् खादसि?

किम् पठथः?

किम् लिखथः?

किम् खादथः?

किम् पठथ?

किम् लिखथ?

किम् खादथ?

त्वम् पाठम् पठसि।

यूयम् फलम् खादथ।

त्वम् विद्यालयम् गच्छसि?

यूयम् मन्दिरम् गच्छथ।

त्वम् पत्रम् लिखसि।

यूयम् गीतम् गायथ।

इस पाठ में हम  
**उत्तम पुरुष** को विस्तार  
से समझेंगे।

### पुरुष

संस्कृत में **3 पुरुष** होते हैं:

**प्रथम पुरुष** **वह, वे, यह, ये** को दिखाता है।

**मध्यम पुरुष** **तुम, तुम सब** को दिखाता है।

**उत्तम पुरुष** **मैं, हम** को दिखाता है।

**हम प्रथम और मध्यम पुरुष को सीख चुके हैं।**

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
<b>प्र°</b> लिखति	लिखतः	लिखन्ति
लिखता है	दो लिखते हैं	लिखते हैं
<b>म°</b> लिखसि	लिखथः	लिखथ
तुम लिखते हो	तुम दो लिखते हो	तुम सब लिखते हो
<b>उ°</b> लिखामि	लिखावः	लिखामः
मैं लिखता हूँ	हम दो लिखते हैं	हम लिखते हैं

**मैं, हम**

**एकवचन** अहम् मैं  
**द्विवचन** आवाम् हम दो  
**बहुवचन** वयम् हम

## चल् - चलना

**एकवचन** अहम् चलामि मैं चलता हूँ  
**द्विवचन** आवाम् चलावः हम दो चलते हैं  
**बहुवचन** वयम् चलामः हम चलते हैं

## पढ् - पढ़ना

**एकवचन** पठामि मैं पढ़ता हूँ  
**द्विवचन** पठावः हम दो पढ़ते हैं  
**बहुवचन** पठामः हम पढ़ते हैं

## खाद् - खाना

**एकवचन** खादामि मैं खाता हूँ  
**द्विवचन** खादावः हम दो खाते हैं  
**बहुवचन** खादामः हम खाते हैं

## पिब् - पीना

एकवचन

द्विवचन

बहुवचन

पिबामि मैं पीता हूँ  
पिबावः हम दो पीते हैं  
पिबामः हम पीते हैं

## धाव् - दौड़ना

एकवचन

द्विवचन

बहुवचन

धावामि मैं दौड़ता हूँ  
धावावः हम दो दौड़ते हैं  
धावामः हम दौड़ते हैं

## गर्ज् – गरजना

एकवचन

द्विवचन

बहुवचन

गर्जामि मैं गरजता हूँ  
गर्जावः हम दो गरजते हैं  
गर्जामः हम गरजते हैं

## चुर - चुराना

एकवचन

चोरयामि मैं चुराता हूँ

द्विवचन

चोरयावः हम दो चुराते हैं

बहुवचन

चोरयामः हम चुराते हैं

## क्रीड - खेलना

एकवचन

क्रीडामि मैं खेलता हूँ

द्विवचन

क्रीडावः हम दो खेलते हैं

बहुवचन

क्रीडामः हम खेलते हैं

## गम् - जाना

एकवचन

गच्छामि मैं जाता हूँ

द्विवचन

गच्छावः हम दो जाते हैं

बहुवचन

गच्छामः हम जाते हैं

## **रक्षा - रक्षा करना**

**एकवचन**

**द्विवचन**

**बहुवचन**

**रक्षामि**

**रक्षावः**

**रक्षामः**

मैं रक्षा करता हूँ

हम दो रक्षा करते हैं

हम रक्षा करते हैं

## **भू - होना**

**एकवचन**

**द्विवचन**

**बहुवचन**

**भवामि** मैं होता हूँ

**भवावः** हम दो होते हैं

**भवामः** हम होते हैं

## **अर्च - पूजा करना**

**एकवचन**

**द्विवचन**

**बहुवचन**

**अर्चामि** मैं पूजा करता हूँ

**अर्चावः** हम दो पूजा करते हैं

**अर्चामः** हम पूजा करते हैं

## अस् होना

एकवचन	अस्मि	मैं हूँ
द्विवचन	स्वः	हम दो हैं
बहुवचन	स्मः	हम हैं

## वद् - बोलना

एकवचन	वदामि	मैं बोलता हूँ
द्विवचन	वदावः	हम दो बोलते हैं
बहुवचन	वदामः	हम बोलते हैं

## वस् - बसना, रहना

एकवचन	वसामि	मैं रहता हूँ
द्विवचन	वसावः	हम दो रहते हैं
बहुवचन	वसामः	हम रहते हैं

## स्था - बैठना

एकवचन

द्विवचन

बहुवचन

तिष्ठामि मैं बैठता हूँ  
तिष्ठावः हम दो बैठते हैं  
तिष्ठामः हम बैठते हैं

## नृत् - नाचना

एकवचन

द्विवचन

बहुवचन

नृत्यामि मैं नाचता हूँ  
नृत्यावः हम दो नाचते हैं  
नृत्यामः हम नाचते हैं

यहाँ पर “संस्कृत सीखें” का प्रथम भाग समाप्त होता है। दूसरा भाग हमारी वेबसाईट पर जल्दी ही प्रकाशित किया जायेगा।

धन्यवाद

[www.rajivdxt.com](http://www.rajivdxt.com)



Ref. - knowledgology.com